07.05.2020

M. Com. IV Semester

Paper – Ist

Subject – Advanced Cost Accounting
(उच्चतर लागत लेखांकन)

Lecture By :

Dr. Rajesh Kesari
Associate Professor
(Ex. HOD & Dean)
Commerce Faculty
Nehru Gram Bharati
(Deemed to be)
University, Prayagraj

Unit – II :

Need, Objects and Methods of Material Control.

सामग्री नियन्त्रण की आवश्यकता, उद्देश्य एवं विधियाँ.

D सामग्री नियंत्रण की आवश्यकता **(Need of material control):-**

एक निर्माणी व्यवसाय में सामग्री की लागत कुल उत्पादन लागत की सामान्यतः 50% या इससे अधिक होती है तथा स्टॉक (अर्थात सामग्री, चालू कार्य व निर्मित माल) की लागत कुल समपत्यिों की लागत की लगभग एक तिहाई होती है। चूंकि सामग्री व स्टाक की लागत काफी अधिक होती है तथा साथ में नियन्त्रणीय होती है, यह आवश्यक है कि उनका नियोजन, क्रय भण्डारण तथा लेखांकन उपयुक्त ढंग से किया जाय तथा स्टॉक नियन्त्रण प्रणाली को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाय कि वह प्रबन्ध को सर्वाधिक लाभकारिता प्रदान कर सके।

सामग्री नियन्त्रण के उद्देश्य (Objects of material control)

सामग्री नियंत्रण के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित इस प्रकार है:–

1 उत्पादन के लिये सामग्री की उपलब्धता बनाये रखना

2 सामग्री के संग्रहण एवं निर्गमन में होने वाली क्षति को रोकना

3 सामग्री मूल्य पर नियंत्रण करना

4 परिचालित विभागों एवं व्यक्तियों के उत्तरदायित्व का निर्धारण करना

5 सामग्री की चोरी को रोकना

6 सामग्री क्षति पर नियंत्रण करना

सामग्री नियंत्रण की विधियां (Methods of inventory control):-

ABC Analysis (ए बी सी विश्लेषण)– ए.बी.सी. तकनीक का पूरा नाम है– "Always Best Control"। इस तकनीक में सामग्री को तीन वर्गो में विभाजित किया जाता है:

A सर्वाधिक उपभोग मूल्य वाली वस्तुएं

B मध्य स्तरीय उपभोग मूल्य वाली वस्तुएं

C कम उपभोग वाली वस्तुएं

उपभोग मूल्य के उपर्युक्त स्तरों के अनुसार ही नियन्त्रण की नीति अपनायी जाती है। ए वर्ग की वस्तुओं पर कठोर नियन्त्रण , बी वर्ग की वस्तुओं पर मध्यस्तरीय नियन्त्रण तथा सी वर्ग की वस्तुओं पर सामान्य नियन्त्रण की नीति का पालन किया जाता है।

सामग्री के वर्गीकरण के लिए निम्न विभाजन का सुझाव दिया जाता है।

वर्ग	सामग्री की मात्रा का %	सामग्री के कुल उपयोग मूल्य का %
अ	10%	70%
ब	20%	20%
स	70%	10%

इस योजना के क्रियान्वयन में निम्नलिखित कदम उठाने पड़ते है:

1. इकाइयों में संभावित उपयोग के आधार पर स्कन्ध की मदों का वर्गीकरण करना।
2. प्रत्येक मद का प्रति इकाई मूल्य निर्धारित करना।
3. प्रत्येक मद की इकाइयों को प्रति इकाई मुख्य से गुणा करके लागत ज्ञात करना।
4. मदों को लागत के अनुसार व्यवस्थित करना।
5. सापोक्षिक मूल्यों को मिलाकर ए.बी.सी. वर्ग बनाना।
6. वर्ग के अनुसार ही स्टाक नियंत्रण की व्यवस्था करना।

लाभः–

1. इससे महंगी सामग्री पर कठोर नियंत्रण सम्भव है।
2. इससे भण्डारण लागत में कमी आती है।
3. उच्च प्रबन्धक केवल महत्वपूर्ण सामग्री पर ध्यान केन्द्रित करके समय की बचत कर सकता है।
4. वैज्ञानिक एवं चयनित नियंत्रण की सहायता से स्टाक आवर्त की ऊँची दर रखी जा सकती है।

E.O.Q. (Economic Order Quantity):- मितव्ययी आदेशित मात्रा

सामग्री एक बार में इतनी मात्रा में क्रय करनी चाहिए कि अधिकतम मितव्ययता से क्रय हो सके। यदि सामग्री अधिक मात्रा में खरीदी जाती है तो सामग्री रखने की लागत (Inventory carrying cost) अधिक पड़ती है अर्थात सामग्री विनियोग पर व्याज, गोदाम एवं बीमा व्यय, अप्रचलन में होने वाली हानि, सामग्री के क्षय से हानि, अंकेक्षण लागत, सामग्री की देखभाल का व्यय अधिक पड़ता है। यदि सामग्री थोड़ी–थोड़ी मात्रा में बार–बार की जाती है तो आदेश देने की लागत (Ordering cost) अधिक पड़ती है अर्थात बार–बार आदेश देने के समय, बार–बार रेल किराया व गाड़ी भाड़ा चुकाने के व्यय लिपिक व स्टेशनरी के व्यय, टेलीफोन व्यय, डाक व्यय, लेखांकन कार्य एवं भुगतान सम्बन्धी व्यय आदि सभी बढ़ जाते है। ये दोनों विरोधी लागतें है और आर्थिक आदेश मात्रा द्वारा दोनों विरोधी घटकों में सामंजस्य स्थापित किया जाता है। इस प्रकार मितव्ययी आदेशित मात्रा वह है जहां पर आदेश देने की लागत और रखने की लागत एक दूसरे के बराबर होती है।

मितव्ययी आदेश मात्रा के निर्धारित की विधियाँ:—इस मात्रा की गणना करने की निम्नलिखित तीन विधियां है—

1. विश्लेषणात्मक विधि (Analytical Method):- इस विधि के अन्तर्गत माल अथवा सामग्री की वार्षिक उपभोग की मात्रा को भिन्न—भिन्न आकार के आदेशों में विभाजित कर लिया जाता है। प्रत्येक आदेश के आकार की आदेशन लागत और रहतिया रखने की लागत ज्ञातकर इन दोनों को जोड़कर लिया जाता है। जिस आकार के आदेश पर कुल स्कन्ध लागत न्यूनतम आती है उसी को आर्थिक आदेश मात्रा मान लिया जाता है। यह विधि सरल है लेकिन इसमें आर्थिक आदेश मात्रा ज्ञात करने में काफी गणनाये करनी पड़ती है।

2. अंकगणित विधि (Arthmatic Method):- यह विधि सबसे ज्यादा प्रचलित है इसे निम्नलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।

$$E.O.Q = \sqrt{\frac{2AB}{C}}$$

A= Annual usage or consumption in units (वार्षिक उपयोग इकाइयों में)

B= Buying or Ordering cost per Unit (क्रय एवं आदेश देने की प्रति इकाई लागत)

C= Carrying cost per Unit (रखने की प्रति इकाई लागत)

Illustration:- Calculate the Economic Order Quantity from the following information (निम्नलिखित सूचनाओं से आर्थिक आदेश ज्ञात कीजिए)

Annual Usage (वार्षिक उपयोग)	20,000 ~~2000~~ युनिट ✓
Ordering or Buying cost per order (प्रति आदेश की क्रय लागत)	रू0 10
Cost per Unit (प्रति इकाई की लागत)	रू0 100
Cost of carrying Inventory (स्टाक संग्रह करने की लागत)	10%

Solution:

$$E.O.Q = \sqrt{\frac{2AB}{C}}$$

$$= \sqrt{\frac{2 \times 20000 \times 10}{10}} = \sqrt{40,000} = 200 \text{ Units}$$

$$\text{Carrying Cost Per Unit} = \frac{100 \times 10}{100} = \text{Rs. } 10$$

$$\text{No of Order in a year} = \frac{20,000}{200} = 100 \text{ Orders}$$

ग्राफ विधि:–**(Graphical Method):-**

इस विधि के अन्तर्गत आदेशित लागतों व रखने की लागतोंके वक्र ग्राफ पर उनके मूल्यों सहित चिन्हित किये जाते है। प्रत्येक वक्र एक दूसरे की विपरीत दिशा में बढ़ता है जहां पर यह दोनों वक्र आपस में एक दूसरे को काटते है वह बिन्दू E.O.Q. का बिन्दु होता है।

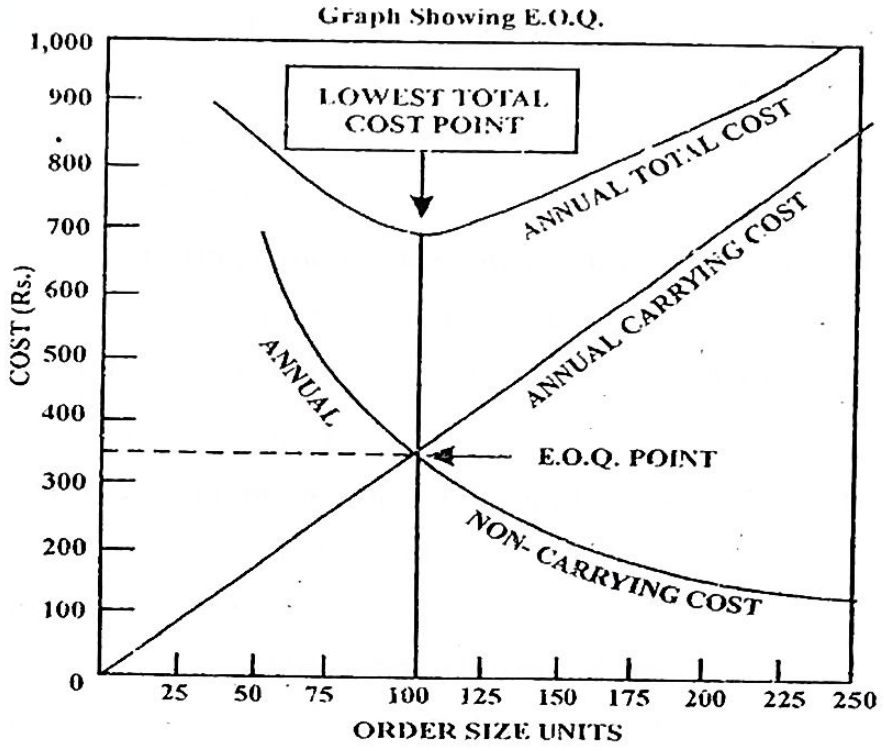

Economic order size=100 Units per i.e, 10 orders in the year, at this point the carrying cost is equal to ordering cost both being Rs. 350 each and total cost of Rs. 700 being the lowest of all the costs. If more or less than 100 Units are ordered in each lot, the total cost in each case could be higher.

निरन्तर गणना प्रणाली **(Perpetual Inventory system):-**

निरन्तर गणना पद्धति, अभिलेखों की एक ऐसी पद्धति है जो नियन्त्रण विभाग द्वारा प्रयोग में लायी जाती है तथा जिससे रहतिये के आवागमन तथा वर्तमान शेष के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है।"

सर्वप्रथम भण्डारगृह में रखे हुए बिन पत्रकों से खाताबही द्वारा प्रदर्शित विभिन्न वस्तुओं के शेषों का मिलान किया जाता है। यदि मिलान करने पर कोई अन्तर आता है तो उस अन्तर–का कारण देखा जाता है। लिपिकीय त्रुटियों को तुरन्त ठीक कर दिया जाता है, बाकी त्रुटियों के कारणों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बिन–कार्ड और भण्डार खाता–बही में प्रदर्शित रहतिया विवरण निम्न कारणों से भिन्न हो सकता है।

(a) परिहार्य कारण (Avoidable causes):-इसमें सामग्री की टूट–फूट अथवा चोरी, सामग्री के रख–रखाव में असावधानी, सामग्री का कम या अधिक मात्रा में निर्गमन और लिपिकीय त्रुटियां सम्मिलित हैं।

(b) अपरिहार्य कारण (Unavoidable causes):- इसमें सामग्री सूखकर अथवा भाप बनकर उड जाना, नमी सोख लेना, आग, दंगे आदि से होने वाली हानि को सम्मिलित किया जाता है।

स्टॉक की भौतिक जांच(Physical Stock verification):-

बिन पत्रकों व स्टाक खाता–बही के शेषों का मिलाप करने के पश्चात् करने के पश्चात् यह आवश्यक है कि उन शेषों की भण्डार में उपस्थित वास्तविक स्टाक से भौतिक जांच की जाय।

स्टाक जांच दो प्रकार से की जाती है–

1 आवधिक स्टॉक जांच **(Periodic stock verification):-** इस प्रकार की जांच निश्चित अवधियों पर की जाती है, यह जांच वर्ष में एक बार अर्थात लेखांकन वर्ष के अन्त में ताकि स्टॉक का मूल्यांकन, अन्तिम खाते व आर्थिक चिटठा बनाने के लिए किया जा सकें। छोटे व्यवसायों के लिए यह जांच उपयुक्त मानी जाती है।

2 सतत् स्टाक जांच (continuous stock verification):- इस पद्धति में स्टाक की जांच वर्ष भर या निरन्तर चलता रहता है। जांच की योजना व प्रोग्राम इस प्रकार बनाये जाते है कि ताकि कार्य में किसी प्रकार की रूकावट उत्पन्न न हो।

निरन्तर स्टाक सूची प्रणाली के लाभः

1. रहतिये की गणना सुगमता से तथा कम समय में की जा सकती है।
2. वर्ष के मध्य में किसी भी समय अन्तिम खाते तैयार किये जा सकते है।
3. सामग्री का क्रय आवश्यकतानुसार होता है।
4. बिन कार्ड और भण्डार खाता–बही से दोहरे नियंत्रण की सुविधा रहती है।
5. भण्डारगृह पर अधिक प्रभावशाली एवं विश्वसनीय नियंत्रण सम्भव हो पाता है।
6. भौतिक गणना के कारण भण्डारगृह में होने वाली गडबड़ी, चोरी या लापरवाही का शीघ्र पता चल जाता है।
7. इस प्रणाली को लागू करने से कर्मचारियों पर नैतिक प्रभाव पड़ता है।